रामलीला का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक महत्व

डॉ० कुमारी अमृता

धोधी, पो0- बेलावारिश,जिला- औरंगाबाद, बिहार

शोध सार

रामलीला तो राम जन्म से लेकर रावण वध और रामराज्य तक प्रदर्शित होती। रामलीला के कलाकार व्यवसायी नहीं, श्रद्धाभाव से गाँव गाँव घूमकर लीला प्रदर्शित करते। वह गाँव उनका गाँव बन जाता। गाँव के लोग आत्मीय बन जाते। गाँव के क्लेश, वैमन्स्य, अनादर भाव, ईष्या, द्वेष,कलह,आपसी दुश्मनी आदि दूर हो जाती। गाँव में सद्भाव और भक्ति की गंगोत्री बहती। पूरा गाँव रामभक्तिमय हो जाता। कहीं कोई दुराचार देखने को नहीं मिलता। कलाकारों के भरण-पोषण का एक पावन भक्तिपूर्ण रामलीला साधन बन जाती। रामनाम की धूम से अंधविश्वास दूर भाग जाता। रामलीला का दर्शन मुक्ति प्रदान करता है, भय बाधा से छुटकारा दिला देता है।

मंगल भवन अमंगलहारी, द्रवहु सुदसरथ अजिरबिहारी ।

बन्दौ गुरु पद परम परागा। सुरुचि,सुवास,सरस अनुरागा।।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में राम की महिमा का मुक्त कंठ से बखान किया है। गोस्वामी जी साहित्य के ऐसे महाकवि हैं जिन्होंने राम की महिमा का बखान कर राम को महानायक का दर्जा दिला दिया। विभिन्न कवियों और संतों के राम अलग-अलग है। राम नाम की महिमा के कुछ अंश उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत है -

रामनाम की लूट है लूट सके तो लूट,
अन्तकाल पछतायेगा जब प्राण जायेंगे छूट।
बिनु हरि कृपा तृण नहिं डोले।
अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम,
दास मलूका कह गये, सबके दाता राम।
भजुमन राम चरण सुखदायी।

उसी तरह 'राम की शक्ति पूजा' में महाकवि निराला ने उनकी महिमा में चार चाँद लगा दिया।

भारतीय संस्कृति में अवतार का महत्त्व है। रामावतार और कृष्णावतार दो ऐसे अवतार हैं जिनके नाम से पूजन-अर्चन की विधि पूरी हो जाती है। कृष्ण कहते हैं कि भक्त मुझे जिस रूप में जपते हैं, उन्हें मैं उसी रूप में ग्रहण कर लेता हूँ। राम कहते हैं कि जो भक्त मुझे रामनाम से भजते हैं वह मेरा प्रिय भक्त हनुमान बन जाता है।

'रमा नाम' की सहज भक्ति चलाकर गोस्वामी तुलसीदास ने हिन्दू सम्प्रदाय को तो बचाया ही, राष्ट्रभक्ति की नीव डालकर देशभक्ति के प्राण भी फूंक डाले।

देश के बाहर भी रामनाम की महिमा है। विदेशी भी दीवाने हो जाते हैं राम का नाम लेते-लेते। सबरी, गिद्ध, जमिल कसाई आदि सभी राम भक्ति में लीन होकर स्वर्ग सिधार गये। रावण, मेघनाद, ताड़का आदि राम के दुश्मनों को भी रामनाम ने मुक्ति और मोक्ष की प्राप्ति हुई। हमारे देश में विवाह, पूजा-पाठ, कथा, समारोह आदि कोई कर्मकांड रामनाम के बिना पूर्ण नहीं होते।

कभी पटना की रामलीला बेहद प्रसिद्ध थी। अब भी है मगर उतनी नहीं। कहते हैं कि रामलीला का दर्शन मुक्ति प्रदान करता है, भय बाधा से छुटकारा दिला देता है।

रामलीला की पूरी टीम होती है। पहले अधिकतर उत्तर भारत खासकर दरभंगा, मधुबनी के कलाकार टीम बनाकर चलते और गाँव-गाँव में जाकर रामलीला दिखलाते, पटने के कई थियेटर और मानस मंदिर रामलीला के लिए सुप्रसिद्ध थे। खासकर दशहरे के समय दुर्गा पूजा के पुजारीगण रामलीला का आयोजन कर पाते। गाँधी मैदान, स्टेडियम, ठाकुरबाड़ी, श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल, रवीन्द्र भवन, कालिदास रंगालय, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, राष्ट्र-भाषा-परिषद् आदि ऐसे स्थान थे जहाँ रामलीला की

धूम मची होती थी। भारत स्काउट गाइड मैदान, कांग्रेस मैदान, हिन्दी साहित्य सम्मेलन तो आदर-सम्मान के साथ प्रतिवर्ष रामलीला टोली को बुलाते थे।

लोगों की गाँव में प्रतिवर्ष राम जन्म से लेकर रावण वध और राम सिंहासन तक की रामलीला देखने का मौका मिलता। गाँव में टोलियाँ आती हैं और गाँव के सामूहिक निर्णय से लीला की शुरुआत होती है। पहले कहीं कोई दहशत, छेड़खानी, रंगदारी, अपराधिक प्रवृत्ति देखने को नहीं मिलती थी। रामलीला दिखाने को टीम गाँव में आ जाती और किसी के बड़े दलान उनका घर बन जाता। स्वयं खाना पकाते और रामलला के साथ भोग लगाते। बड़ी ही श्रद्धा और भक्तिभावना से लोग उस टीम के प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करते।

रामलीला तो राम जन्म से लेकर रावण वध और रामराज्य तक प्रदर्शित होती। कुछ दृश्य ऐसे होते हैं जिन्हें देखने के लिए जनमानस दल की तरह उमड़ जाते हैं, जैसे-सीता स्वयंवर, परशुराम की लीला, धनुष भंग होने पर, राम विवाह, सीता का अयोध्या आगमन, राम वनगमन, ताड़का वध, अहिल्या उद्धार, सीताहरण, अशोक वाटिका, कुम्भकरण जागरण, अंगूठी दर्शन, बालि वध, समुद्र पर पुल बांधना, राम-रावण युद्ध, लक्ष्मण मूर्छा-संजीवन बूटी लाना, रावण-वध, राजतिलक आदि ऐसे दृश्य होते हैं जिन्हें देखने के लिए रात-रात भर लोग जागे रहते। गाँव में चोरी चमारी नहीं, सभी के मन में भक्ति-भावना समायी रहती। रामलीला टीम में प्रायः 10 से 15 कलाकार होते। राम लक्ष्मण को देखने के लिए भीड़ उमड़ जाती। उनके प्रति लोगों का मस्तक झुक जाता। दो दृश्य बहुत ही कारुणिक होते-वन गमन अैर लक्ष्मण मूर्छा। लीला के साथ दो बातों की ओर लोगों का ध्यान लगा रहता। आरती के माध्यम से बहुत राशि इकट्ठी हो जाती है। पूरी रामलीला टीम का अवासन, नास्ता, भोजन, ओढ़ना-बिछौना करीब एक ही जगह रहता जब तक रामलीला होती रहती।

गाँव के लोग उस समय रोने लगते जब कलाकारों की टीम सम्पूर्ण रूप से समाप्त कर दूसरे गाँव जाते। खासकर महिलाएँ राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, शत्रुध्न की पूजा करती और विलखती जातीं। मैंने अब तक काई नाटक, नाटिका, लीला, नौटंकी, गुड़िया नाच नहीं देखी जहाँ ऐसा अपनापन आत्मिता और कारुणिक दृश्य उपस्थित होता हो।

रामलीला के सूत्रधार का पाव पोछते-पोछते लोग रोने लगते। रामलीला का प्रारम्भ सूत्रधार मंगलाचरण से करते। मंगलाचरण श्रीराम चन्द्र कृपालु भजन या रामचरितमानस आरती या शिव स्तुति से होता।

गाँव में एक छोटा-मोटा स्टेज बना दिया जाता, पीछे रंग महल होता और मेकअप आदि करने वाले भी होते। राम, लक्ष्मण, सीता को मंच पर बिठाकर मंगलगान और आरती होती तब लीला प्रारम्भ होती। जो व्यक्ति जिस पात्र की भूमिका अदा कर रहे होते उसे उस प्रसंग की चौपाइयाँ, दोहे, छन्द, और स्वयं निर्मित रचित गीत याद रखने होते। अधिकांश भाग रामलीला का कमर में हारमोनियम बाँधकर सूत्रधार ही उच्चारण करते और वादक तदनुसार ताल, धुन, लय पर वाद्ययंत्र बजाते। अधिकांश महिला पुरुष राम सीता का स्टेज के नीचे से ही पूजन कर राम भक्ति और आस्था का परिचय देते। जितने कलाकार होते उन्हें बाहर जाना वर्जित होता। नाचगान की तरह एक रुपया पैसा बुलाकर नहीं देता। श्रद्धाभाव से चढ़ावा करते और नाम की उद्घोषणा के साथ ही श्रीरामचन्द्र की जय उच्चारण होता। कितनी महिलाएँ तो भाव-भक्ति में इतनी लीन हो जाती कि राम-सीता का पैर पखारे बिना चैन नहीं।

रामलीला की टीम में जो भी कलाकार होते सभी भक्ति भाव से भरे होते। टीम में नये कलाकारों को प्रशिक्षण लेना पड़ता। रामचरितमानस या बाल्मीकि रामायण की चौपाइयों, दोहों या श्लोकों को कंठस्थ करने पड़ते। सभी कलाकार सदाचार की प्रतिमूर्ति होते। सात्विक आहार ग्रहण करते। रामलीला के दरम्यान सभी कलाकार गाँव में ही रहते। जो माला उठाते गाँव में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ जाती। गाँव के युवक तैयारी में जुट जाते। बहुत सारे सामान तो टीम के कलाकार खुद लेकर आते। मुकुट, धनुष, तीर, तरकस, गदा आदि पहनावा कलाकार खुद ही लाते। कुछ हल्के-फुल्के सामान गाँव वाले बनाकर उनको उपलब्ध करा देते।

कम से कम 15 दिन या महीना भर रामलीला चलती। पूरा ग्रामीण वातावरण भक्तिमय हो जाता। टीम को

जो भी कुछ सामग्री व चढ़ावा मिलता उससे व्यक्ति में कभी अहंभाव नहीं समाता। उस सामग्री या चढ़ावा में रामभक्ति के समर्पण का भाव रहता। सभी श्रद्धावान बने रहते। कुविचार, कुदृष्टि छू तक नहीं पाती। पूरा गाँव अयोध्या, किसकिन्धा, दण्डकारण्य, अशोक वाटिका, अयोध्या से लेकर जनकपुर सदृश्य लगता। कलाकार आचरण और व्यवहार से कुशल होते जाते। आँखों में आँसू लिए गाँव से विदाई लेते। पूरा गाँव ढोल, झाल, मृदंग के साथ गाते हुए उन्हें विदा करते। उनके चले जाने पर गाँव में महीनों भर उदासी छायी रहती। लगता गाँव का कुछ लुट गया है।

रामलीला के कलाकार व्यवसायी नहीं, श्रद्धाभाव से गाँव गाँव घूमकर लीला प्रदर्शित करते। वह गाँव उनका गाँव बन जाता। गाँव के लोग आत्मीय बन जाते। गाँव के क्लेश, वैमन्स्य, अनादर भाव, ईष्या, द्धेष,कलह,आपसी दुश्मनी आदि दूर हो जाती। गाँव में सद्भाव और भक्ति की गंगोत्री बहती। पूरा गाँव रामभक्तिमय हो जाता। कहीं कोई दुराचार देखने को नहीं मिलता। कलाकारों के भरण-पोषण का एक पावन भक्तिपूर्ण रामलीला साधन बन जाती। रामनाम की धूम से अंधविश्वास दूर भाग जाता।

निष्कर्ष:

सारांशत: यह कहा जा सकता है कि रामलीला के प्रदर्शन से समाज में सांस्कृतिक चेतना का उदय होता चला गया। आपसी सौहार्द को बढ़ावा देने में रामलीला की बड़ी भूमिका रही है। प्रेम, दया, करूणा, त्याग, परोपकार को प्रसारित करने के कारण दिन पर दिन रामलीला की महत्ता बढ़ती गई। एक समय पटना की रामलीला भी अपने उत्कर्ष पर थी। समय और परिस्थति के कारण रामलीला की सक्रियता धीरे-धीरे घटती चली गई। ऐसी बात नहीं कि अब रामलीला नहीं हो रही है। रामलीला अभी भी हो रही है। मगर कलाकारों में वह समर्पण की भावना अब देखने को नहीं मिलती। अब रामलीला पूर्णत: व्यवसायिक हो गई है। समर्पण और व्यवसाय में भला मुकम्मल तालमेल बैठे भी तो कैसे?

संदर्भ-ग्रंथ सूची :

1. रामायण : एक नया दृष्टिकोण, लेखक-प.ह.गुप्ता, प्रकाशक-विश्व साहित्य, बी1/ई-7, मोहन कॉपेरेटिव, बदपुर, नई दिल्ली- 110044 ।
2. कितने खरे हमारे आदर्श- सं. -राकेश नाथ, प्रकाशक- विश्व बुक्स, बी-1/ई-7, मोहन कॉपरेटिव, बदरपुर, नई दिल्ली-110044 ।
3. श्रीरामचरितमानस, टीकाकार- हनुमान प्रसाद पोद्धार, प्रकाशक, गोविन्द भवन- कार्यालय-गीता प्रेस, गोरखपुर-273005।
4. श्री रामचरित मानस, लेखक तुलसीदास, प्रकाशक- गीता प्रेस, गोरखपुर।
5. लोक नाटकों की विशेषताएँ, लेखक- श्रीकान्त व्यास, प्रकाशन, दक्षिणी मंदिरी, पटना- 800001 बिहार।